खरगोश ने सुना

कोरी डोएरफेल्ड

एक दिन, टेलर ने कुछ बनाने की सोची.

कुछ नया.

कुछ नायाब.

कुछ आलीशान.

टेलर को अपने महल पर बहुत गर्व हुआ.

लेकिन तभी अचानक ...

उसका बनाया महल तहस-नहस हो गया.

मुर्गी ने वो सबसे पहले देखा.
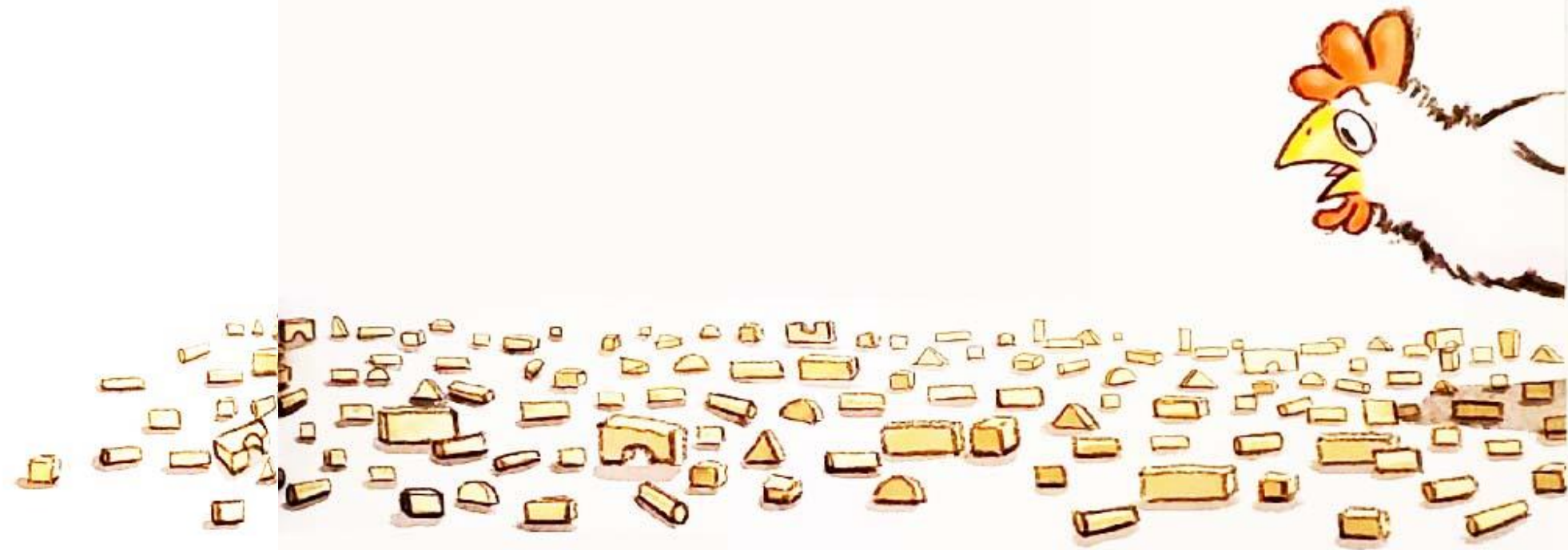
"कूकड़ू-कूं! कूकड़ू-कूं! कितनी शर्म की बात है!

मुझे बहुत खेद है, मुझे बहुत दुःख है कि ऐसा हुआ!"

"चलो हम उसके बारे में बातें करें,

उसके बारे में चर्चा करें!

कूकड़ू-कूं! कूकड़ू-कूं!"

टेलर का बात करने का मन नहीं हुआ.

इसलिए मुर्गी वहां से चली गई.

उसके बाद भालू आया.

"अरे! यह कितना भयानक हुआ!

मुझे पता है कि तुम बहुत गुस्सा होगे!

चलो इसके बारे में चिल्लाते हैं!

गररर! गररर! ग्रारर!"

लेकिन टेलर का चिल्लाने का मन नहीं हुआ.

इसलिए भालू भी वहाँ से चला गया.

हाथी को पता था कि उसे क्या करना है.

"ट्रम्पा-दा! मैं महल को ठीक कर सकता हूँ!

लेकिन हमें यह याद हो कि वो महल कैसा दिखता था."

लेकिन महल कैसा था टेलर का
वो याद करने का मन नहीं हुआ.

इसलिए हाथी भी चला गया.

उसके बाद अन्य जानवर आए.

लकड़बग्घा: "ही-ही!

चलो उस बात पर हँसते हैं!"

शुतुरमुर्ग: "गल्प!

चलो छिपते हैं और दिखावा करते हैं
जैसे कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं!"

कंगारू: "टिक-टोक.

यहां कितनी गंदगी है!

चलो सबकुछ उठाकर फेंक देते हैं!"

और साँप: "शशशश.

चलो जाकर किसी और का महल गिराते हैं."

लेकिन टेलर को किसी के साथ कुछ भी करने का मन नहीं हुआ.

इसलिए वे सभी एक-एक करके चले गए...

फिर अंत में टेलर बिलकुल अकेला रह गया.

उस चुप्पी के माहौल में टेलर ने खरगोश को देखा तक नहीं.

लेकिन खरगोश उसके करीब,
और करीब आता गया.

वे दोनों चुपचाप बैठे रहे.

फिर अंत में टेलर ने कहा,

"कृपया मेरे साथ रहो."

अंत में टेलर ने उसके गर्म
शरीर को महसूस किया.

खरगोश ने उसकी बात सुनी.

खरगोश ने टेलर का चीखना सुना.

खरगोश ने टेलर की याद सुनी...

और वो हँसा.

खरगोश ने टेलर की छिपने की योजना भी सुनी...
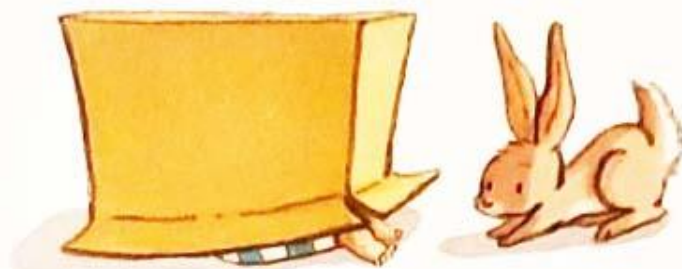
सब कुछ फेंक देने की बात भी...

किसी और के महल को बर्बाद करने की बात भी.

इस सब के दौरान, खरगोश कहीं नहीं गया.

और जब सही समय आया,

तो खरगोश ने टेलर की फिर से

चीज़ें बनाने की योजना सुनी.

"मैं अब और इंतज़ार नहीं कर सकता," टेलर ने कहा.

"अब कुछ अद्भुत बनेगा."

अंत